REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2018

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कुण्ठा, आक्रामकता एवं मानसिक स्वास्थ्य का ग्रामीण तथा शहरी आधार पर तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. कुसुमलता[1] , श्वेता गुप्ता[2]
[1]प्राचार्य, संत कबीर शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, दूदू, जयपुर.
[2]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय,जयपुर.

1.सारांशः—

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कुंठा, आक्रामकता एवं मानसिक स्वास्थ्य का ग्रामीण तथा शहरी आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना था। अध्ययन हेतु राजस्थान राज्य के जयपुर जिले की चार तहसील आमेर, बस्सी, सांगानेर, फुलेरा के विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु डॉ. अरूण कुमार एवं अल्पनासेन गुप्ता द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण, बी.एम. दीक्षित तथा डी.एन. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित रिऐक्शन टू फ्रस्ट्रेशन स्केल एवं स्वनिर्मित उपकरण आक्रामकता स्केल का प्रयोग किया गया। शोध से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कुण्ठा एवं आक्रामकता में ग्रामीण तथा शहरी आधार पर अन्तर पाया गया परन्तु विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में ग्रामीण तथा शहरी आधार अन्तर नहीं पाया गया।

2. प्रमुख शब्द—कुण्ठा, आक्रामकता, मानसिक स्वास्थ्य।

3. प्रस्तावना :—

शिक्षा मानव जीवन का आधार स्तम्भ हैं। शिक्षा बालक को अपने आस पास के वातावरण के साथ समायोजन में समर्थ बनाती है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का केन्द्रबिन्दु है विद्यार्थी, जिसके चारों ओर समस्त शिक्षण प्रक्रिया घूमती रहती है। आज एक विद्यार्थी को जीवन में सफल होने एवं उच्च शैक्षिक उपलब्धि के लिए शारीरिक एवं मानसिक रूप से सक्षम होना आवश्यक है परन्तु वर्तमान में विद्यार्थी को एक उचित पाठ्यक्रम का चयन, परीक्षा—परिणामों का भय, उच्च शैक्षिक उपलब्धि, माता—पिता की उच्च आकांक्षाएँ आदि अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जिसके परिणामस्वरूप बालक धीरे धीरे कुण्ठित होने लगता है और यही कुण्ठा कभी कभी आक्रामकता में परिवर्तित हो जाती है जिससे उसका मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है।

4.समस्या कथन :—

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कुंठा, आक्रामकता एंव मानसिक स्वास्थ्य का ग्रामीण एवं शहरी आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।

5. अध्ययन के उद्देश्य :—

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कुण्ठा का ग्रामीण एवं शहरी आधार पर तुलनात्मक अध्यन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आक्रामकता का ग्रामीण एवं शहरी आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का ग्रामीण एवं शहरी आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

6. अध्ययन की परिकल्पना :–

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कुण्ठा में ग्रामीण एवं शहरी आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आक्रामकता में ग्रामीण एवं शहरी आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में ग्रामीण एवं शहरी पर आधार सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

7. अध्ययन की परिसीमा :–

1. अध्ययन जयपुर के जिले की आमेर, बस्सी, सांगानेर, फुलेरा तहसील के 10 राजकीय एवं 10 निजी विद्यालय तक सीमित रखा गया है।
2. अध्ययन उच्च माध्यमिक स्तर के 600 विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।

8. विधि :–

अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

9. न्यादर्श :–

न्यादर्श के चयन हेतु यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श के लिए जयपुर जिले की चार तहसील आमेर, बस्सी, सांगानेर, फुलेरा में स्थित विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

10. उपकरण :–

प्रदत्तों के संकलन हेतु निम्नांकित उपकरणें का प्रयोग किया गया है–

1. मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण – डॉ. अरूण कुमार एवं अल्पना सेन गुप्ता द्वारा निर्मित।
2. रिऐक्शन टू फ्रस्ट्रेशन स्केल– बी.एम. दीक्षित तथा डी.एन. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित।
3. आक्रामकता स्केल– स्वनिर्मित उपकरण।

11. प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

1.उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कुंठा में ग्रामीण एवं शहरी आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी संख्या – 1

क्र.सं.	क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t–मूल्य
1.	ग्रामीण	324	102.22	3.630	6.145
2.	शहरी	276	103.96	3.216	

0.05 पर सार्थकता स्तर =1.96 स्वतंत्रता के अंश = 598

0.01 पर सार्थकता स्तर = 2.57

सारणी संख्या 1. –उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कुण्ठा को ग्रामीण व शहरी आधार पर दर्शाती है। ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की कुण्ठा का मध्यमान क्रमशः 102.22 एवं 103.96 तथा मानक विचलन क्रमशः 3. 630 एवं 3.216 है तथा स्वतंत्रता के अंश 598 पर टी – मूल्य 6.145 प्राप्त हुआ जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर

सार्थक टी – मूल्य से अधिक है। परिकल्पना उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कुण्ठा में ग्रामीण व शहरी आधार पर सार्थक अन्तर पाया जाता है अतः निराकरणीय परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। सारणी से यह ज्ञात होता है कि शहरी विद्यार्थी ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक कुण्ठाग्रस्त है।

आरेख संख्या – 1

उच्च माध्यमिक के स्तर के विद्यार्थियों की कुण्ठा का ग्रामीण व शहरी आधार पर मध्यमान एवं मानक विचलन प्रदर्शित करता आरेख।

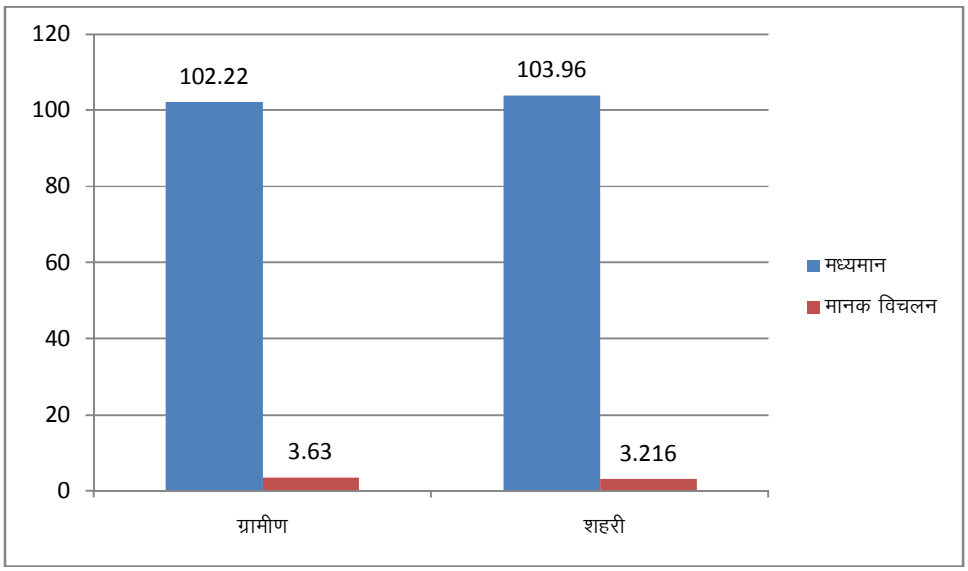

2.उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आक्रामकता में ग्रामीण एवं शहरी आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी संख्या – 2

क्र.सं.	क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t–मूल्य
1.	ग्रामीण	324	45.52	3.558	5.700
2.	शहरी	276	47.04	2.887	

0.05 पर सार्थकता स्तर = 1.96 स्वतन्त्रता के अंश = 598

0.01 पर सार्थकता स्तर = 2.57

सारणी संख्या 2. – उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आक्रमकता को ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की आक्रामकता का मध्यमान क्रमशः 45.52 एवं 47.04 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.558 एवं 2.887 है तथा स्वतंत्रता के अंश 598 पर टी मूल्य 5.700 प्राप्त हुआ जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी – मूल्य से अधिक है। परिकल्पना उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आक्रामकता में ग्रामीण एवं शहरी आधार पर सार्थक अन्तर पाया जाता है अतः निराकरणीय परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। सारणी से यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थियों में आक्रामकता अधिक है।

आरेख संख्या –2.

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आक्रामकता का ग्रामीण एवं शहरी आधार पर मध्यमान एवं मानक विचलन प्रदर्शित करता आरेख।

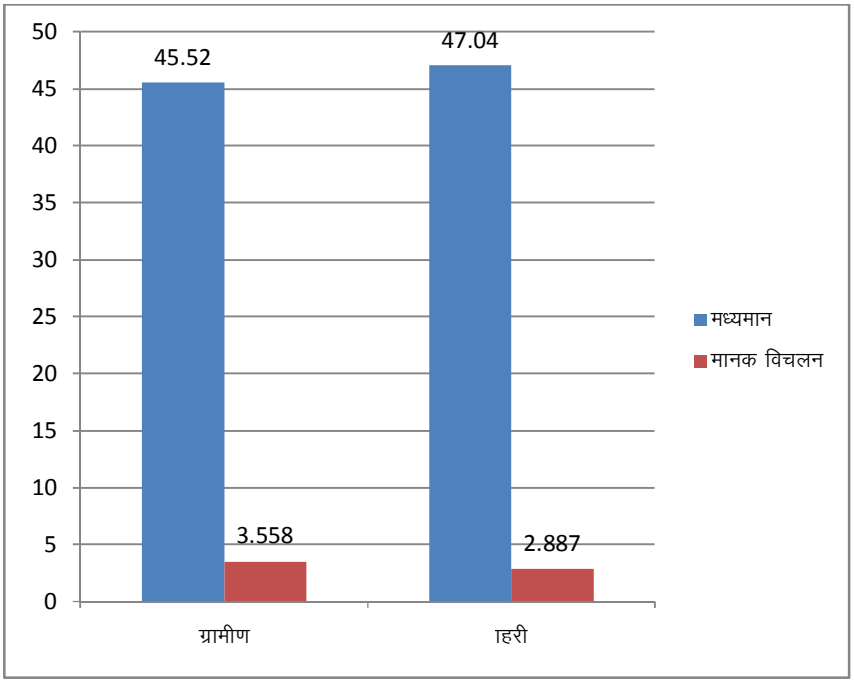

3.उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में ग्रामीण एवं शहरी आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी संख्या – 3.

क्र.सं.	क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t–मूल्य
1.	ग्रामीण	324	117.81	7.915	
2.	शहरी	276	118.48	5.557	1.169

0.05 पर सार्थकता स्तर = 1.96 स्वतन्त्रता के अंश = 598

0.01 पर सार्थकता स्तर = 2.57

सारणी संख्या 3 – उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को ग्रामीण व शहरी आधार पर दर्शाती है। ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का मध्यमान क्रमशः 117.81 एवं 118.48 है तथा मानक विचलन क्रमशः 7.915 एवं 5.557 है तथा स्वतंत्रता के अंश 598 पर टी – मूल्य 1.196 प्राप्त हुआ है जो 0.05 स्तर पर सार्थक टी – मूल्य से कम है। परिकल्पना उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में ग्रामीण व शहरी आधार पर सार्थक अन्तर नही पाया जाता है अतः निराकरणीय परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। सारणी से यह ज्ञात होता है कि शहरी विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य स्तर ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में उच्च है।

आरेख संख्या – 3.

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का ग्रामीण एवं शहरी आधार पर मध्यमान एवं मानक विचलन प्रदर्शित करता आरेख।

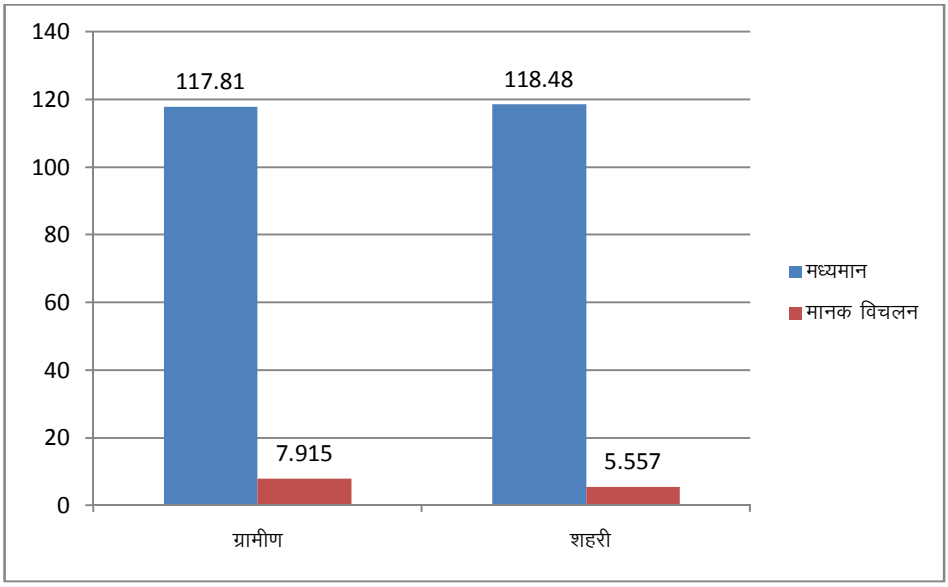

12. निष्कर्ष :–

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कुण्ठा में ग्रामीण एवं शहरी आधार पर सार्थक अनतर पाया जाता है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आक्रामकता में ग्रामीण एवं शहरी आधार पर सार्थक अन्तर पाया जाता है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में ग्रामीण एवं शहरी आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सन्दर्भ :–

1. भार्गव, महेश (2010), आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन, आगरा, राखी प्रकाशन.
2. कपिल, एच.के. (2010), अनुसंधान विधियाँ, आगरा : एच.पी.भार्गव बुक हाउस.
3. लाला, रमन बिहारी एवं जोशी, सुरेश चन्द्र (2013). शिक्षा मनोविज्ञान एवं प्रारम्भिक सांख्यिकी, मेरठ : आर. लाल बुक डिपो.
4. श्रीवास्तव डॉ. डी.एन. एवं वर्मा, डॉ. प्रीति (2013), आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान एवं परीक्षण, आगरा : श्री विनोद पुस्तक मंदिर.
5. सिंह, अरूण कुमार (2016), आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान, नई दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन.